11-04-2023

अनुच्छेद 371F

समाचार पत्रों में क्यों?

हाल ही में, सिक्किम के पूर्व मुख्यमंत्री ने दावा किया कि सिक्किम के लोग अनुच्छेद 371F के रूप में विश्वासघात महसूस कर रहे हैं, जो सिक्किम के लिए विशेष प्रावधानों की गारंटी देता है, का 'उल्लंघन' किया गया था।

त्वरित मुद्दा?

- हाल ही में, सिक्किम के लिए वित्तीय विधेयक, 2023 पेश किया गया- यह विधेयक सिक्किम में रहने वाले किसी भी भारतीय नागरिक के रूप में सिक्किम को फिर से परिभाषित करता है, उन्हें उन मूल निवासियों के समान लाभ प्रदान करता है जिनके पूर्वजों के नाम वर्ष 1961 के रजिस्टर में दर्ज थे।

इन राज्यों को मिली हैं विशेष सुविधाएं	
371	महाराष्ट्र और गुजरात
371ए	नागालैंड
371 बी	असम
371 सी	मणिपुर
371 डी और ई	आंध्र प्रदेश
371 एफ	सिक्किम
371 जी	मिजोरम
371 एच	अरुणाचल प्रदेश
371 आई	गोवा
371 जे	कर्नाटक

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- इस पहल को अनुच्छेद 371F के उल्लंघन के रूप में देखा जा रहा है, जो 1975 में सिक्किम के भारत में विलय का आधार था।
- पूर्व मुख्यमंत्री के अनुसार सिक्किम के लोग अनुच्छेद 371F के उल्लंघन से ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं।
- सिक्किम राजनीतिक हिंसा का अड्डा बन गया है और वर्ष 2024 में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रपति शासन की मांग की जा रही है।
- सिक्किम जैसे संवेदनशील सीमावर्ती राज्य में अशांति राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए चिंताजनक है।
- अनुच्छेद 371F के अनुसार, केवल सिक्किम के वंशजों (जो भारत में इसके विलय से पहले राज्य में रहते थे) जिनके नाम 1961 के रजिस्टर में उल्लिखित थे, उन्हे सिक्किम का मूल निवासी माना गया है
- उनके पास सिक्किम में जमीन खरीदने का अधिकार है,उन्हें राज्य सरकार की नौकरी मिलती है तथा आयकर देने से भी छूट दी गई है।
- वर्ष 1975 में भारत का 22वां राज्य बनने से पहले तक सिक्किम एक स्वतंत्र राज्य था।
- सिक्किम के राज्यपाल के पास सिक्किम विधान सभा के संबंध में विशेष शक्तियाँ हैं, जिसमें एक सदस्य को विधानसभा में नामांकित करने की शक्ति और कुछ विधेयकों पर अपनी सहमति देने की शक्ति शामिल है।
- सिक्किम के लोगों को उनकी विशिष्ट पहचान और सांस्कृतिक विरासत की रक्षा के लिए कुछ संवैधानिक सुरक्षा उपाय प्रदान किए गए हैं।

- केंद्र सरकार के पास सिक्किम से संबंधित मामलों पर सलाह देने के लिए विशेषज्ञों की एक समिति नियुक्त करने की शक्ति है और राज्य सरकार भी सिक्किम की विशिष्ट पहचान की सुरक्षा से संबंधित मुद्दों की जांच के लिए समितियों की नियुक्ति कर सकती है।
- अनुच्छेद 371-गुजरात और महाराष्ट्र राज्यों के लिए विशेष प्रावधान प्रदान करता है।
- अनुच्छेद 371A -नागालैंड राज्य के लिए विशेष प्रावधान और स्वायत्तता प्रदान करता है।
- अनुच्छेद 371B-असम राज्य के लिए विशेष प्रावधान प्रदान करता है।
- अनुच्छेद 371C-मणिपुर राज्य के लिए विशेष प्रावधानों का प्रावधान करता है।
- अनुच्छेद 371D-आंध्र प्रदेश राज्य में पिछड़े क्षेत्रों के विकास की देखरेख के लिए एक विशेष समिति की स्थापना का प्रावधान करता है।

देश में बाघों की संख्या में वृद्धि

समाचार पत्रों में क्यों?

मैसूर (कर्नाटक)| प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रोजेक्ट टाइगर के 50 साल पूरे होने पर शनिवार को देश में बाघ गणना के ताजा आंकड़े जारी किए। जनगणना के अनुसार, बाघों की संख्या में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। जारी किए गए ताजा जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, देश में बाघों की संख्या 2018 में 2,967 थी जो 2022 में बढ़कर 3,167 हो गई है।

त्वरित मुद्दा?

- जनगणना के अनुसार, देश में 2006 में बाघों की संख्या 1,411, 2010 में 1,706 और 2014 में 2,226 थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि बीते 10 वर्षों में बाघों की संख्या में 75 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। भारत में दुनिया की 70 फीसदी बाघ आबादी है। यह संख्या बढ़ने वाली है।

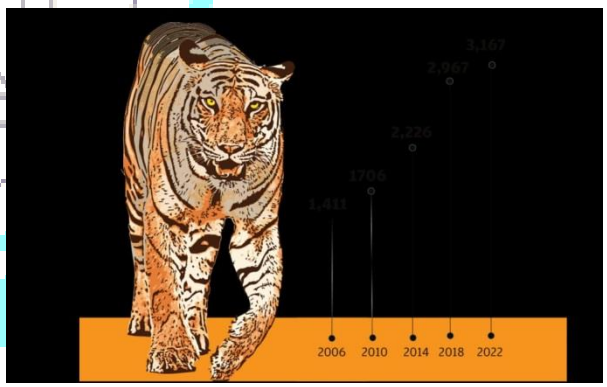

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- प्रोजेक्ट टाइगर की 50 वीं वर्षगांठ के अवसर पर प्रधानमंत्री द्वारा बाघों की संख्या की घोषणा की गयी और अखिल भारतीय बाघ अनुमान (पाचवां चक्र) की सारांश रिपोर्ट जारी की गयी।
- प्रधानमंत्री द्वारा इंटरनेशनल बिग कैट एलायंस (IBCA) का भी शुभारंभ किया गया।
- इंटरनेशनल बिग कैट एलायंस, बाघ, शेर, तेंदुआ, हिम तेंदुआ, प्यूमा, जगुआर और चीता सहित दुनिया के सात प्रमुख बिग कैट के संरक्षण पर ध्यान देगा।
- प्रधानमंत्री द्वारा अमृत काल का विजन फॉर टाइगर कंजर्वेशन का भी लोकार्पण किया गया।
- नवीनतम बाघ जनगणना के अनुमान के अनुसार, 2022 में भारत में 3,167 बाघ हैं, 2018 में यह संख्या 2,967 और 2014 में 2,226 थी।
- भारत में दुनिया की बाघों की आबादी का लगभग 75% हिस्सा है।

- बाघ जनगणना के अनुसार, शिवालिक पहाड़ियों और गंगा के बाढ़ के मैदानों में बाघों की आबादी सबसे अधिक बढ़ी है, इसके बाद मध्य भारत, उत्तर पूर्वी पहाड़ियों, ब्रह्मपुत्र बाढ़ के मैदानों और सुंदरबन का स्थान आता है।
- पश्चिमी घाट में बाघों की संख्या में कमी आयी है।
- प्रत्येक चार साल के अनुमानों में, अनुमानित बाघ आबादी की एक सीमा प्रदान की जाती है और औसत संख्या को नवीनतम बाघ आबादी के रूप में दर्शाया जाता है।
- वर्ष 2018 में, बाघों की आबादी न्यूनतम 2,603 और अधिकतम 3,346 थी, जिसका औसत मान 2,967 था।
- वर्तमान अनुमान, संरक्षित क्षेत्रों के बाहर बाघों की बढ़ती हुई संख्या पर ध्यान नहीं देता है।

अन्य प्रमुख तथ्य?

बाघ की संरक्षण स्थिति

- वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 - अनुसूची I
- प्रकृति के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ (IUCN) रेड लिस्ट - लुप्तप्राय
- वन्य जीवों और वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन (CITES) - परिशिष्ट I

- राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) द्वारा 2006 से प्रत्येक 4 वर्ष में राज्य के वन विभागों, गैर सरकारी संगठनों के सहयोग से और भारतीय वन्यजीव संस्थान (WII) द्वारा समन्वित, "बाघों की स्थिति, सह-शिकारियों, शिकार और उनके आवास" के लिए एक राष्ट्रीय मूल्यांकन करता है।
- भारत में भारतीय वन्यजीव बोर्ड द्वारा वर्ष 1972 में शेर के स्थान पर बाघ को राष्ट्रीय पशु के रूप में स्वीकार किया गया।
- वर्ष 1973 में 9 टाइगर रिजर्व के साथ प्रोजेक्ट टाइगर की शुरुआत की गई थी।
- वर्ष 2023 तक देश में टाइगर रिजर्व की संख्या 53 हो गयी है, जिनका कुल क्षेत्रफल 75,796 वर्ग किमी है, जो भारत के भूमि क्षेत्र का लगभग 2.3% है।
- सरकार द्वारा डिजिटल इंडिया के तहत बाघों की स्मार्ट निगरानी के लिये एक कार्यक्रम 'मोनीटरिंग सिस्टम फॉर टाइगर्स इंटेंसिव प्रोटेक्शन एंड इकोलॉजिकल स्टेटस' (MSTrIPES) शुरू किया गया।

- बाघों के संरक्षण को प्रोत्साहन देने हेतु प्रति वर्ष 29 जुलाई को 'विश्व बाघ दिवस' मनाया जाता है।

न्यूज फटाफट

पर्यावरण सांख्यिकी 2023

- हाल ही में, सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MosPI) ने पर्यावरण सांख्यिकी 2023 का वॉल्यूम 1 जारी किया है।
- **प्रमुख निष्कर्ष:**
  - भारत में मापी गई वार्षिक वर्षा की मात्रा में 2021 की तुलना में 2022 में वृद्धि हुई है।
  - वर्ष 2022 में राजस्थान में अधिकतम हीटवेव के दिन दर्ज किए गए थे। इसके बाद पंजाब, हरियाणा, झारखंड और दिल्ली का स्थान रहा है।
  - विशेष रूप से असम और हिमाचल प्रदेश में 2010 के बाद से हीटवेव की घटना नही देखी गई है।
- वर्ष 2018 में उत्तरी हिंद महासागर (NIO) द्वारा अनुभव किए गए चक्रवाती तूफानों की संख्या में काफी वृद्धि हुई, जो बाद के वर्षों में भी बनी रही। हालांकि, 2022 में इसमें फिर से कमी देखी गई है।

लद्दाख की काष्ठ नक्काशी कला

- प्रधान मंत्री ने लद्दाख की काष्ठ नक्काशी के लिए अपनी तरह के पहले भौगोलिक संकेतक (GI) टैग की प्रशंसा की है।
- लद्दाख की काष्ठ नक्काशी कला लद्दाख क्षेत्र में सौंदर्य की दृष्टि से एक जीवंत कला शैली रही है।
- GI टैग इसके निर्यात को बढ़ावा देगा तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वस्तुओं का प्रचार करेगा। साथ ही, यह उत्पादकों और हितधारकों के लिए आर्थिक समृद्धि लाने का कार्य भी करेगा।
- GI टैग का इस्तेमाल ऐसे उत्पादों पर किया जाता है, जिनकी एक विशिष्ट भौगोलिक उत्पत्ति होती है। इसी उत्पत्ति के कारण इन उत्पादों में विशिष्ट गुण या प्रतिष्ठा होती है।
  - वस्तुओं का भौगोलिक संकेतक (पंजीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999 GI के पंजीकरण व बेहतर संरक्षण का प्रावधान करता है। यह टैग 10 वर्षों तक वैध रहता है।

बाबू जगजीवन राम (1908-1986)

- प्रधान मंत्री ने बाबू जगजीवन राम को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की।
- इनका जन्म बिहार में हुआ था। वे एक स्वतंत्रता सेनानी थे। वे अस्पृश्य मानी जाने वाली जातियों के प्रमुख नेता थे।
- **योगदान:**
  - वर्ष 1934 में, उन्होंने अखिल भारतीय रविदास महासभा और ऑल इंडिया डिप्रेस्ड क्लास लीग की स्थापना की थी।
  - वर्ष 1935 में, वह हैमंड आयोग के सामने पेश हुए थे तथा पहली बार दलितों के लिए मतदान के अधिकार की मांग की थी।
  - उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन, सत्याग्रह आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया था।
- व्यक्तिगत मूल्य: साहसी, दूरदर्शी आदि।

मौद्रिक नीति समिति (MPC)

- MPC ने सर्वसम्मति से नीतिगत रेपो दर को 6.50 प्रतिशत पर अपरिवर्तित रखने का निर्णय लिया है।
  - रेपो दर में कोई बदलाव नहीं करके, भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) यह सुनिश्चित करने की कोशिश कर रहा है कि भारत की वित्तीय प्रणाली को ऐसे किसी संकट का सामना नहीं करना पड़े जैसा अमेरिका और यूरोप में बैंकों के डूबने के रूप में देखा गया है।

MPC के बारे में:

- इसका गठन 2016 में RBI अधिनियम, 1934 की धारा 45ZB के तहत किया गया था।
- यह मुद्रास्फीति लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक नीतिगत रेपो दर को निर्धारित करती है।
- इसमें 6 सदस्य होते हैं। इनमें से तीन सदस्य RBI से होते हैं, जिसमें RBI गवर्नर भी शामिल हैं। गवर्नर समिति का पदेन अध्यक्ष होता है। इसमें उसका निर्णायक मत होता है।
- MPC की एक वर्ष में कम-से-कम चार बैठकें करना आवश्यक है। बैठक के लिए कोरम चार सदस्यों का है।

ग्लोबल ट्रेड आउटलुक एंड स्टेटिस्टिक्स, 2023

- इसे विश्व व्यापार संगठन (WTO) जारी करता है।

प्रमुख निष्कर्ष:

- वर्ष 2023 में विश्व पण्य व्यापार की मात्रा 1.7 प्रतिशत तक बढ़ने का अनुमान है। इसके 2024 में 32 प्रतिशत तक पहुंचने का अनुमान है।
- विश्व वाणिज्यिक सेवा व्यापार का मूल्य 2022 में 15 प्रतिशत बढ़कर 6.8 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया था।
- हालांकि, भू–राजनीतिक तनाव, खाद्य असुरक्षा, संभावित वित्तीय अस्थिरता आदि मुद्दों के कारण इन पूर्वानुमानों में व्यक्त आंकड़ों में गिरावट आने का जोखिम है। ये मुद्दे मौद्रिक नीतियों को सख्त करने व ऋण के बढ़ते बोझ के कारण उत्पन्न हुए हैं।

वर्ल्ड एनर्जी ट्रांजिशंस आउटलुक, 2023

- इसे अंतर्राष्ट्रीय नवीकरणीय ऊर्जा एजेंसी (IRENA) ने जारी किया है।

प्रमुख निष्कर्ष:

- वर्तमान प्रतिबद्धताएं और योजनाएं IRENA के 1.5 डिग्री सेल्सियस के लक्ष्य से काफी पीछे रह गई हैं। इसके परिणामस्वरूप, 2050 में 16 गीगाटन (GI) का उत्सर्जन अंतराल होगा।
- वर्ष 2022 में सभी ऊर्जा संक्रमण प्रौद्योगिकियों में वैश्विक निवेश 1.3 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंच गया था।

सिफारिश:

- नेट-जीरो प्रतिबद्धताओं को कानून में शामिल किया जाना चाहिए। साथ ही, कार्यान्वयन योजनाओं को उसी के अनुरूप लागू किया जाना चाहिए।
- प्रत्येक निवेश और योजना निर्माण संबंधी निर्णय में भविष्य की निम्न- कार्बन अर्थव्यवस्था की संरचना तथा भूगोल पर विचार किया जाना चाहिए।

नगरी दुबराज चावल

- छत्तीसगढ़ के नगरी दुबराज चावल की किस्म को भौगोलिक संकेतक का दर्जा दिया गया है।
  - वर्ष 2019 में छत्तीसगढ़ के जीराफूल चावल को भी भौगोलिक संकेतक दर्जा प्रदान किया गया था। इस प्रकार दुबराज राज्य की दूसरी चावल की किस्म बन गई है, जिसे यह टैग दिया गया है।
- धमतरी जिले के नगरी में एक महिला स्वयं सहायता समूह "माँ दुर्गा स्वसहायता समूह दुबराज की फसल कटाई करता है। इसी समूह ने भौगोलिक संकेतक दर्जे के लिए आवेदन किया था।

विशेषताएं:

- नगरी दुबराज को इसकी सुगंध के कारण छत्तीसगढ़ का बासमती कहा जाता है।
- वाल्मीकि रामायण में इस अनाज का संदर्भ मिलता है।
- यह चावल की देशी किस्म है और इसके दाने छोटे होते हैं।

थिरामहोत्सवम

- 'पूथन और थिरा एक प्राचीन लोक नृत्य है। यह केरल के त्रिशूर जिले में थिरामहोत्सवम के दौरान प्रदर्शित किया जाता है।
- आमतौर पर हर साल पूरम उत्सव के दौरान पूथन और थिरा का प्रदर्शन होता है।
- पौराणिक कथाओं के अनुसार, थिरा और पूथन भगवान शिव के उपसेनापति थे। उन्हें देवी काली के साथ मिलकर राक्षस राजा दारिका को मारने के लिए भेजा गया था।
- राक्षस का वध करने के बाद, थिरा और पूथन ने अपनी जीत का जश्न मनाने के लिए देवी काली के साथ नृत्य किया था। इस नृत्य को प्रदर्शित करने वाले नर्तक मन्नन और पेरुमन्नन समुदायों से संबंधित हैं।
- इस नृत्य में उपयोग किया जाने वाला मुख्य वाद्य यंत्र पारा (एक ताल या आघात वाद्य यंत्र) है।

क्रय प्रबंधक सूचकांक (Purchasing Managers Index: PMI)

- एसएंडपी ग्लोबल मार्केट के अनुसार, मार्च 2023 में विनिर्माण क्षेत्रक के लिए भारत का PMI तीन माह के उच्च स्तर पर पहुंच गया था।
- PMI एक आर्थिक संकेतक है। इसकी गणना अलग-अलग कंपनियों के मासिक सर्वेक्षणों के बाद की जाती है।
  - यह विनिर्माण और सेवा क्षेत्रक दोनों के प्रदर्शन को दर्शाता है।
  - PMI की गणना 0 से 100 के बीच की जाती है। इसके तहत 50 से अधिक PMI विस्तार को दर्शाता है और 50 से कम PMI संकुचन को दर्शाता है। 50 के बराबर स्कोर यह दर्शाता है कि कोई बदलाव नहीं हुआ है।
  - PMI डेटा को जापानी फर्म निक्केई प्रकाशित करती है, लेकिन इस डेटा को मार्किट इकोनॉमिक्स नामक कंपनी संकलित और तैयार करती है।

प्रोसोपिस चिलेंसिस

- एक अध्ययन के अनुसार प्रोसोपिस चिलेंसिस मन्नार की खाड़ी बायोस्फीयर रिज़र्व (GoMBR) में 21 द्वीपों में देशज वनस्पति को नुकसान पहुंचा रहा है। प्रोसोपिस चिलेंसिस विदेशी वृक्ष की एक आक्रामक प्रजाति है।

प्रोसोपिस चिलेंसिस के बारे में:

- यह शुष्क क्षेत्रों का सूखा प्रतिरोधी वृक्ष है। यह दक्षिण अमेरिका के चार देशों (अर्जेंटीना, बोलीविया, चिली और पेरू) की स्थानिक प्रजाति है।
- यह एक फलीदार वृक्ष है। यह आकार में छोटे से लेकर मध्यम तक होता है। यह 12 मीटर ऊंचाई और 1 मीटर व्यास तक बढ़ता है।
- प्रोसोपिस चिलेंसिस को चिली मेसकाइट के नाम से भी जाना जाता है।

- GoMBR, भारत का पहला समुद्री बायोस्फीयर रिज़र्व है। यह आर्कटिक प्रदेश से प्रवास करने वाले तटीय पक्षियों के लिए महत्वपूर्ण अधिवासों में से एक है।

बशोली चित्रकला

- यह कठुआ जिले (जम्मू) की स्थानीय लघु चित्रकला शैली है। इसे भौगोलिक संकेतक (GI) टैग प्रदान किया गया है।
- यह जम्मू क्षेत्र का पहला स्वतंत्र GI टैग वाला उत्पाद है।
- इसे पहाड़ी चित्रकला की प्रथम शैली माना जाता है।
- इस शैली में चित्रों को कागज, कपड़े या लकड़ी पर चित्रित किया जाता है। इसमें प्राकृतिक रंजकों और रंगों का उपयोग किया जाता है।
- GI टैग उन उत्पादों पर इस्तेमाल किया जाने वाला एक संकेतक है, जिनकी एक विशिष्ट भौगोलिक उत्पत्ति होती है। इस उत्पत्ति के कारण इनमें कुछ गुण या प्रतिष्ठा होती है ।

नेत्रावली वन्यजीव अभयारण्य

- नेत्रावली वन्यजीव अभयारण्य में ब्लैक पैंथर को छोड़ा जाएगा।
- यह दक्षिण-पूर्वी गोवा में अवस्थित है। इस अभयारण्य से नेत्रावली या नेतुरली नदी निकलती है। यह जुआरी नदी की एक महत्वपूर्ण सहायक नदी है।
- इसमें सावरी और मैनापी नाम के दो बारहमासी जलप्रपात हैं।
- यहां ज्यादातर आर्द्र पर्णपाती वनस्पतियां पाई जाती हैं। साथ ही, सदाबहार और अर्ध- सदाबहार वन भी मिलते हैं।
- यह अभयारण्य पूर्व दिशा में कोटिगाओ वन्यजीव अभयारण्य से और उत्तर दिशा में भगवान महावीर वन्यजीव अभयारण्य से घिरा हुआ है।
- प्रमुख जीवः तेंदुआ, विशाल गिलहरी, माउस डियर, नीलगिरि वुड पिजन, सीलोन फ्रॉगमाउथ आदि ।

परम्बिकुलम टाइगर रिज़र्व (PTR)

- उच्च न्यायालय ने जंगली हाथी अरीकोम्पन को पराम्बिकुलम रिज़र्व में स्थानांतरित करने का आदेश दिया है।
- यह रिज़र्व केरल के पलक्कड़ जिले में अवस्थित है।
  - यह संरक्षित क्षेत्रों के एक क्लस्टर के भीतर केरल की नेल्लियमपती और तमिलनाडु की अन्नामलाई पहाड़ियों के बीच में स्थित है।
  - वनस्पतिः सदाबहार, अर्ध-सदाबहार, आर्द्र- पर्णपाती, शुष्क पर्णपाती और शोला वन ।
  - जीवः बाघ, तेंदुआ, ढोल, स्लॉथ बियर, नीलगिरि तहर गौर, हाथी, सांभर, जंगली सूअर आदि।